CRITERION VII – INSTITUTIONAL VALUES AND BEST PRACTICES

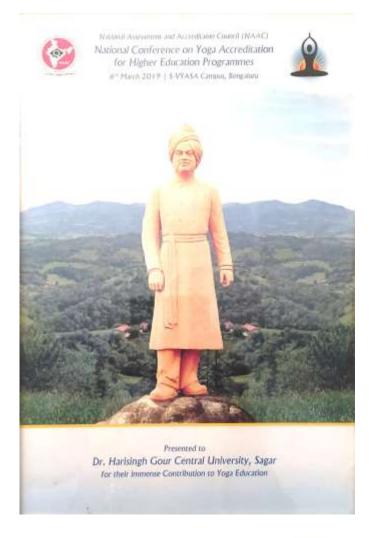
Best practices

- Organizing International Yoga Day on 21st June every Year.
- Organizing Karam Yoga on every Friday in the department.
- Organizing Holistic Health & Therapy through Yoga Camps before Yoga day for university teachers, officers, students, employees & General Public.
- Celebration of Vivekanand Day on 12th January every year.
- Celebration of Mahatma Gandhi Jayanti on 2nd October (Svachchhata Diwas) every year.
- Organizing Mental Health Day on 10th October every year.

Strength

- ❖ A full flagged established department.
- Qualified, experienced and dedicated teaching faculty with Ph.D.
- Faculty contributing in design development and implementation of curriculum in Board of Studies of a University.
- The programmes that are developed in the department helps the student to enrich their knowledge base to apply both in theoretical and practical/applied.
- Continued academic growth and professional development through Seminars, Workshops, Refresher courses, Conferences etc.

Achievements



YOGA PROTOCOL (SOME COMMON YOGA PRACTICES)









IVD- 21 JUNE 2015, Dr. Harixingh Goor Central University SAGAR-Madhya Pradesh-India

योग एक विज्ञान है: कुलपति

अन्य एक निकास के उनकार में हैं, हरिका मेर के क्षेत्र अन्य प्रोत की प्रिकास के उनकार में हैं, हरिका मेर के क्षेत्र किरहीकारण में उन प्रेत को कुछ कार्यक्रम का अर्थकार किया गावा में र नार्मीय स्थान के छान भीत अर्थना पर विक्रीन मुद्राओं के उससे किया की किया मानकार मात्र प्रिकास किया प्रोत्तर के उससे किया में मानकार में प्रतिभाग के क्ष्य एक्सी की अर्थन किया में मानकार में क्ष्य किया में वनन का ब्रिजान में की मानकार क्ष्मित्रकार करने के क्षा कि मित्र मो किया मान स्थानित का करने के क्षा कि मित्र मी किया मान स्थानित का करने के क्षा कि मित्र मी किया मान स्थानित का करने के क्षा कि मित्र मी किया मान स्थानित का क्ष्य के स्थान की क्ष्य में क्षिप



योग पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला संपन्न

योग पर आयोजित राष्ट्रीय कायोशाला संपन्न
सक्त है, तरीक ते क्षेत्रक ते किया विकास के विकास के स्वास्त्रक के स्वास्त

योग विज्ञान को घर-घर तक पहुँचाने की आवश्यकता : प्रो. तिवारी

विवि में अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

जागरण न्यून, सागर

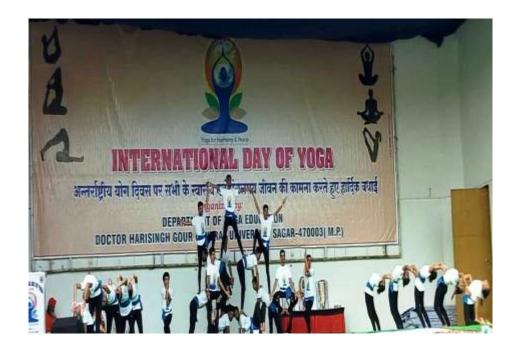
डॉ. हरीसिंह गौर विवि के योग शिक्ष विभाग में अंतराष्ट्रीय योग दिवल के अवलर पर आयुष मंत्रालय के निर्देशन में प्राप्त योगाभ्यास लगभग 500 से अधिक विश्वविद्यालय के कर्मचारी, विद्याधियों, शिक्षको एवं अधिकारियों ने गौर प्रांगण में किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता यिव की फेकल्टी अफेयर निदेशक प्रो. अर्चना पाण्डें में की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि जोधपुर के ग्रो. डा. रामगोपाल थे एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में योग

विशेषण्य डॉ. आशीष फटके, हैदराबाद के योगाचार्य एनआर भागेंव उपस्थित थे। मुख्य अतिथि ने अंतराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर संबोधित करते हुए कहा कि योग जिस तरह से विश्व में ज्याप्त हो रहा है इसके सफारात्मक प्रभाव को दशांता है और भारत विश्व गुरू की दिशा में अग्रसर हो रहा है। योग द्वारा मन को नियंत्रित करते हुए अपने लक्ष्य को सहज प्राप्त कर सकते हैं। प्राचीन काल के अपेशा योग को आवश्यकता आधुनिक समय में ज्यादा है क्योंकि आज हमारा जीवन शैली विकृत हो गया है।



हम वैदिक जीवन पद्यति का अवैज्ञानिक कह कर न कारने लगे हैं। जबकि हमारी संस्कृति पूर्णवः वैज्ञानिक व समीचिन है बस जरूरत है तो इसके वैज्ञानिक तथ्य को सामने लाने को। यह तभी संभव है जब हम शोध के द्वारा इसके वैज्ञानिक तथ्यों को उज्जयर करें। आगे एक शोध के यारे बताते हुए कहा कि क्रियायोग से न्यूरो कार्डिएक फिजियोलोजी प्रभावित होता है। चिंता व अवसाद कम होता है। क्रालिटी आफ लाइफ सुधरता है। विशिष्ट अतिथि मंबर्ड के योग विशेषज्ञ हाँ, आशीष फड़के ने योग दिवस पर सबको स्वास्थ्य रहने की कामना करते हुए बताया कि आधुनिक व्यस्त जीवन में प्रत्येक व्यक्ति को स्वास्थ्य के प्रति नागरूक रहने एवं इसके लिये जीवन पर्यन्त अनुशासित जीवनचर्या को अपनाने की आवश्यकता एवं महत्त्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि व्यक्ति संतुलित चितन य चरित्र को अपनाकर एक स्वस्थ य सभ्य समाज का निर्माण कर सकता है। क्वोंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का चास होता है। हैदराबाद से विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे योगाचार्य एनआर भाग्य ने सागर

विवि के साथ संबंध बताते हुए कहा कि मैंने इसी
विश्वविद्यालय का छात्र रहते हुए योग सीखा और
बिहार स्कूल आफ योग मृंगेर से विधिवत योग शिक्षा
प्राप्त कर योग का प्रचार प्रसार देश विदेश में किया।
योग विभागाध्यक्ष प्रो. गणेश शंकर गिरो ने बताया
कि डा. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय विश्व का ऐसा
प्रथम विवि है जहां पर योग का विभाग 1959 में
खुला और 1980 में सर्व प्रथम बार शोध में 1980
में पूर्व योगविभागाध्यक्ष डॉ. कालीवास जोशी के
निवेशन में पीएचडी की उपधि प्रदान की गई।



1959 से विश्वविद्यालय में दी जा रही योग की शिक्षा, समझाया जा रहा महत्व

पत्रिका न्यूज नेटवर्क satria.com

सागर आज पूरी दुनिया योग के
महत्व की समझ गई है। लेकिन
क्या आपको पता है, जब दुनिया
में योग का आज जैसा प्रचार
प्रसार नहीं था उस समय सागर
विश्वविद्यालय में योग की शिक्षा
युनिवर्सिटी में सबसे पहले 1959
में योग विभाग खुला था, जिसने
कर्ड लोगों को योग की शिक्षा दी

और उसके महत्व को समझाया। योग विभाग की शुरूआत में केवल युजी की कक्षाएं शुरू हुई थी। धीरे-धीर विद्यार्थियों का रूझान इस और ज्यादा बढ़ने लगा तो 2002 में पीजी और पीएचडी की शुरूआत हो गई। हर साल यहां 200 किग्नार्थी योग की एडाई करने के लिए देशाभर से अते हैं। इस वर्ष बनारस, हरिखण, राजस्थान और महाराष्ट्र सहित अन्य यूमरे राज्यों के विद्यार्थी हैं।

ऐसे आया योग विभाग खोलने का विचार

विभाग के वर्तमान अध्यक्त डॉ. गणेश शंकर मिरि ने बताया कि विश्वविद्यालय के यूसरे कूलपति आरपी त्रिपाठी को पेट में दर्द की शिकायत थी, एक दिन उनकी मुलाकात योगी से हुई जिसने केम से उनकी बीमारी दूर कर दी। तभी से डॉ. त्रिपाठी को येग विभाग खोलने का आइडिया आया और उन्होंने योगी से पुनिवर्सिटी में योग पढ़ने को कहा लेकिन योगी ने माना कर दिया।

वैज्ञानिक बने पहले योग टीचर

डॉ. त्रिपाठी के बाद पं. झारका प्रसाद मिश्र कुलपति बने। उन्होंने पुणे रिश्वत एसीकल्चर कॉलेज में वैज्ञानिक रहे कालीवास को योग की कलास लेने के लिए कहा। लेकिन नौकरी छोड़कर आना कालिवास के लिए मुश्किल था। कालिवास के लिए मुश्किल था। कालिवास की एक को थी कि अगर युनिवर्सिटी में विभाग खुलेगा तभी वह योग सिखाने आयेंगे। पंडित जी ने यह बात मान ली और योग विभाग खोलने की अनुमति दें दी। यहां 1959 में ही योग विभाग युक्त हो गया। अब योग विभाग की अपनी अलग बिहिडंग हैं।

योग में हो रही पीएचडी

विश्व विद्यालय में योग विभाग की स्थापना के बाद पहले तो स्नातक स्तर पर थल रह कोर्स में वैकल्पिक विषय के रूप में शुरु किया गया। छात्रों की रुचि को देखते हुए इसमें मास्टर डिग्री और पीएवडी भी कराई जाने लगी। वारीब 25 विद्यार्थी देश से पीएवडी कर



डॉ. गौर समाधि परिसर में भी आयोजित हुआ योग दिवस

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के गौर समाधि स्थल पर मंगलवार को विश्व योग दिवस का आयोजन पूरे उल्लंस एवं प्रोटोकॉल के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपित प्रो. राघवेन्द्र प्रसाद तिवारी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में वेदप्रकाश शर्मा, पुतिस महानिरीक्षक, पुलिस मुख्यालय भोपाल की उपस्थित उलेखनीय रही। देश के विभिन्न क्षेत्रों से योग एवं अन्य विषयों के विशेषज्ञ भी अतिथि के रूप में मंच पर उपस्थित रहें। आयुष विभाग के द्वारा जारी और प्राप्त प्रोटोकॉल के अनुसार सीडी के माध्यम से कार्यक्रम का विधिवत संचलन किया गया। प्रारंभ में वंदना एवं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का संदेश और विदेश मंत्री श्रीमति सुषमा स्वराज का संदेश भी प्रोटोकॉल सीडी के माध्यम से प्रशास्ति किया गया। इस अवसर पर विभिन्न योग मुद्राओं एवं योगासनों का अभ्यास किया गया। 500 से अधिक संख्या में पूरा कार्यक्रम स्थल उत्सह से पुरित रहा। ध्यान एवं योग के अभ्यास के परचात मंचासीन विद्वानों ने योग का जीवन में महत्व विषय पर अपने विचार ब्यक किये। मुख्य अतिथि वेदप्रकाश शर्मा ने कहा कि योग और शिक्षा के लिए विश्वविद्यालय एवं कुलपति द्वारा किये जा रहे प्रयास प्रशंसनीय है। उन्होंने योग के महत्व पर भी प्रकाश बाला। इस अवसर पर विश्वविद्यालय परिवार से शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी, छात्र-छात्रायें एवं बड़ी संख्या में नगरवासी एवं अतिधिगण उपस्थित रहे।

अंतरोद्रीय योग दिवस पर विशेष 🥒 डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में जुटे देशभर के विद्वानों ने दैनिक भारकर से साझा किए योग के कुछ अनछूए पहलू

वह योग में ऐसा रमा कि हमेशा साथ रहने वाली रायफल यमुना में फेंव

ठाकमार प्राथित साम

अंतररांग्टीम योग किवार के उपालका में र्धा. हर्सीयह पीर केंद्रीण विश्वविद्यालय के चीन विच्या में देशभर में विद्यान जुटे हैं। देश्या भारवर से खास चर्चा में इन लोगी ने बोग पर अपनी बेखाक राग दी। वॉन पर अपने-अपने अनुभव सद्या अनक्ष्य पारत भी उज्ञानर किए। सभी इस बात पर महस्त्रत है कि योग सुख की एक ऐसी अनुभूति है जो के प्रेक्टम से आते है। काफी देर से इसका अन्य दिखाई देश है, लेकिन जब आप इसे लगकर करते हैं तो अपने आप परिवर्तन होने लगते हैं तन में और मन में। गह आपन्हे बीचरी से भी दूर रखता है।

अवानक मेरी टेवल पर सवफल रहा दी

वर्ग स्टब्स्ट में खेताला की भेरे क्यान रेम्प्रमर पत्नी है। यह सार जाने यो बात है इक व्यक्ति कुछ देवों से त्यानार क्वार में अ खा बा में उसे वहीं अवन बा स्वीं के दिन वे इक देव एए प्रबार ओक्टान्ट उसकाः अध्यक्तक तेरी देखन पर उसने राज्यका रहा हो। बोल कि रहा एके 47 है। केरे अने तथा बहुत युग्न जनत रिजर अब अरिना

श्रीत प्रशास है, यह व्यक्तपर नवा में अमें आता है, यह नवा और वसूचा में क्राफ्ल फेळ आहा उसके डीवन से खेन सकत से ऐसा प्रीतार्थन आह कि अब कर वह इसे में राम हुआ है।

- व्हें. शर्ति प्रस्तर विकार, सर्वाकार संप्रकार के के बात के कार्या करिया क

चें. किथ अधेरेडिक कर्जन भी हैं। बोल की अभी एक गए अंब्रेजी की फिल्मों का लिए जनलप कर प्रकेशी।

योग वीमार होने से रोक सकता हैं

इस बन से नहीं रहना प्राहिए कि क्षेत्र से कोई ਬੋਸਟੇ ਪਰਵਸ ਨੀਨ ਦੀ ਭਾਰਤੀ। ਹੁਣ ਕਏ ਜੋ ਹੀਏ कितात में बादा करें, लेकिस बेमार्ट को बाद से बदल करते के लिए क्या में उनकी ही उनकी हैं। बिका क्या के बर्जित देश दोई एतकः उदाहरून रहा होताः दोत एक कांच्यांनेतं व अन्तर्गात्व संदेश है। वीच अवत तम और रोकार पर फिरायम है तो बोल्डिय यान होती।

चेंगा को आउ कुछ एवं तक मेंडिकल सहस में साको रून है। केंग्र सहस के मार्कि विराहत को उत्तव इच्छिला बन क्रान्त है। वेज अहेरिक व तार्गरेक प्रसारक है।

- th sits enthances to Autor these on of feet

हो. मुक्तेप्रस्थात को बचना से ही होता हा सीठ है। अल्ली उत्तर दिख क्षेत्र अला अवांत्र मंत्रलेख्या स्वयंत्रामंत्र के क्षेत्र ली ती

योग की स्रांतियाँ पर लिख डाली किताच

🗾 ६७७५ ने योग कर रहा हूं। सेने इसे अनुसा विन्य। फिर सेच कि वर्ती यह मेरे त्या का कोई सम तो नहीं। विस्ताल को बूट करने के रिपट् मेरी वर्ती में योग के करें में पहला शुरू किया। पारा कि वर्तमान में बीम का जो विज्ञांत पन दल है वह असल में बोज है की वहीं। यह धर्म कर फिरसा में नहीं। कहा जात है कि फेर्म बन्नों के लिए संबुक्त

न्या करा जा है के का का का का का का है। तकका पहल है। वहीं जीत ज़ीवों में में प्रमाण जीवा अभागा तीव को लेकर अमें मी कई भ्रतियां हैं। इस पर मैंसे केवा कीम करपत्रका ट् वलेक्टरी नकड पुरतक रिप्डी है। - विक्रिया महेला क्ष्मा

चेतीराज मुक्तेश यंत्रा पर जाजी महेस्कानंद के जान से किताने रिश्वारों हैं। लेखा दिल्ली के रहनो वाले हैं।

 ५६७ की बत है। मैं उस सबस संस्कृत नहारिकाला में पहला था। करफार्लिक स्टूप्यीत की सरोह प्रसाद के स्मितिकारण में उसे का कार्यवान का मुख्य का सभी कार कार्यक्रम के लिए अपने अपने सम्र का एक्टीविटी दर्भ विवारी कर रहे हैं। तुझे अपने को कोमानवर करना था सही योग नहीं आह था। विस्तान जाती तनकहीं से तुरो क्रेन को क्रिका निवर्क वह किन है और अब क

दुर का वा जाना त्याचा वह वा तर का ता तर का जा तै की है जो पूर्व हुआ 75 सम में अबू हे चुकी है। व्यक्तिय य कि ते हैं का त्याचा हूं। अब में जूरे तरह दिन हूं की सकुक को स्थान बनात है। इसर्व ज्यारा और कुछ-गर्ड सन्द्रण प्रया प्री. तसराज्ञ शर्मा, वर्गान्य

धनवान सर्जा, पंजाब प्रशीवर्थिती के दिलाई प्रोफेक्ट हैं। उसी एक बीग पर 10-12 अप्रकाशिक बंध करेन प्रके हैं।



योग विभाग को और उन्नत एवं विकसित किया जाएगा : कुलपति

वर्तिक गोर वि.वि. सागा द्वार अंतरिहेत पोर्याच्या पूर्व योग तमं स्वास्थ्य के द्वीर मारकका देश येग कर्यस्थात का साम येग विश्वा के प्राप्त कथ में कुलाति हो, राज्येन्ड gape Smarth will assessed the Become & पोराचारे प्रथम धर्मन के युक्त साहित्य हैं हो, मैर एवं में सरामती की प्रतिमा पर

सामार्थन से संग्रा हुआ। मोर्गावधान्यकार हो गर्गका संबद्ध गिरि ने स्वयुक्त भागत हमें अंतर्राह्मित सीन दिवस

1.20 क् एक प्रम प्रम दिस्तीय का कार्यक्रमार्थ आयेथिक होती जिल्हों । 5 क्र. विश्वका सम्बन्ध आप हुआ के प्रम हैं राज्यिक एवं मालिया बुट्यों या अपयोग भी: क्रिये कार्यवास के 12 जून तक विक प्रसादन पर होगी। हुसैय कार्यवास ११ - १३ जून को नोट विकास पर अध्योग डीपी एवं प्रमूर्ण बार्रशाला सीर एवं सार्थीसक स्थापन पर आपति क्षेत्री। 20-21 क्यू को चीर एवं सार्थीयक स्थापना पर प्रकृत क्षेत्रीओं वृत्त्र 21 क्यू जावीका के एवं विर्धित कार्यक्रमें की जानकारी । को अंतरिक्षेत्र मोर्गाटका का जायेकर किया

ने साबर इस निभीवहाग के पुरुष् प्राप्त के जग में निवास दिनों के पद करी हुए कहा कि यह तिथ का उपन संगीतिक 1989 में वह करी हुए कहा कि यह तिथ का उपन संगीतिका 1989 में वह सार्व हुए कहा कि यह तिथ का उपन हुआ का जो 3) जीएम निर्मित के मुग्तेश्वर्णन में निरम्बर ज्यांनि कर गाँच है और कर्तमार बुतार्गत जो जिलाते इसे एक भारत में निर्माण उच्चा पीता तीन्यान एवं स्वारंग स्वारंग के कर्ता में न्यानिक करने में ज्यासाल हैं। याननीय उधारमध्ये बोदी भी गोग को सिक्ष भा से पहुच्छने का कार्य पूर्ण निद्या से पिना रहे हैं और उभी कराण विश्व सत्ता पर मोग दिवस 21 जून को सन्ताम जा रहा है।

प्रवेश 2) पूर्व के प्रवेशन में सुराणी औं, अरणी तिकारें ने अपने अभावतीय प्रवेशन में सुराणी औं, अरणी तिकारें ने येश विभाग के विकास के लिए अध्यासन देते हुए सामा कि केन्द्रीय विभिन्न के सुरागींगों भी एक पैनक, मानव संस्थान संसे बीमति उम्रति हराती को अध्यक्षक में बेंगालेर में हुई बिहार्में केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में योग प्राप्तन करते हेतू एक ब्याहत स्वयत्त्वम वैद्या काले एवं योग विश्ववर्ध को स्वयंत्व करते तथा पूर्व स्वयंत्रिक विश्ववर्ध के दरिवण एवं तकियंत्र हेतू एक समिति का गाल किया गयः। अव रिकट प्रीवय में स्थित ही विश्वविद्यालय के पीन निवारों का निकास होया। कार्यस्थल के लिक्सपेटी के अनुवारों को सुरक्षा उन्होंने सभी से बीच को और रक्षण अन्यस्य एवं को पुरुषा उन्होंने प्रार्थ से बीन को और रहत अध्यक्त दर्व वैजनिक तीची पर कर्त करने की अरहासकत पर का देरे को



कहा । कर्मचेन का किरेस महत्त्व बतले हुए उन्होंने कहा कि उन्हें चीनों की प्रति एवं रापूर्ण पाला विवास कार्यपेण से थी प्रध्य है हम योग्याने को राजी कि जिलकों, कार्यकारियों एवं अधिकारियों को जीवन में अध्यान कार्यर ।

कार्यातला में अधिक संख्या में जिल्लामें उपरिचल के किमी प्राप्त, निर्मात वन्द्रम, विकासी, पेक्टर रीमा, सुनित वार्त्याची, सुनित सबू अधिन, पर्यान अधिक, सुनीत कुमा, अपित कुमा, दीपरिवाद, अवारी, सर्विक सुकार, समारी, दिनेता, पुणेन्द्र, सूर्योकाम, विकास सर्वेद प्रमुख थे।



ाग एक विज्ञान भी है और दर्शन भी: शशिभूषणान

योग एक जिल्लान भी है और दर्शन भी। दर्शन के रूप में नेम बेक्क पर टिका हुआ है। वेदान्त के सिद्धानी पर येगू यैज़निक कड़ीटी पर कस जाता है। योग एवं भौतिक विज्ञाने में अंतर होता है। भौतिक विज्ञानों में फोने, पदार्थ अज्ञत सेते हैं निर्दे हम खोनते हैं। वे नदीन उद्श्वटित होने बाले तत्व बज्ज अम बीतने के प्रकट होते हैं। ऐसे भीतिक खान उनार एका है। हम भागत विद्यानों में हम भागता से जात वर्षे ओर जाते हैं जर्चाक येग विद्वान में हम डात परार्थों को पुनः जनने का प्रवास बतरें हैं। यहीं येंग का वैद्यानक दृष्टिकोण हैं। उन्हें उर्गत डॉ. शक्तिभूमणानंद ने गाँग विभाग डॉ. हर्वसिंह गाँर विश्वविद्यालय सागर द्वारा आयोजित अवश्रेष्ट्रीय बेब संगोध्ही के समाच्य सत्र में यय समान्द्रा के संगालन सत्र म बतौर मुख्य आँतीय व्यक्त किए। स्थानी शांशभूगणागंद ने कहा कि योग हमाये पराग से जुनित बान्, देशज ज्ञान है। विज्ञान में ठक और प्रविधि के आधन पर बहारड में

उपस्थित तथ्यों का उद्यादन होता है। योग विज्ञान में भौतिक पदाओं के अल्बना सुरुप तल और कारण तल परस्थित ब्रह्मण्डीय त्रिक्त संकल्प और चेतना पर अवेगण कर अक्रमोत्कर्य की साध्य की नारी हैं। इसलिए येंग को पर बिजान कहते हैं। इसके पूर्व आन प्रतः बेल्स में अंतर्वस्ट्रीय चेंग दिवस के वयलस्य में आयोजित कार्यक्रम में विकास में अधियानक व्यक्ति ने मूच्य असिम् कार्यांच महामंत्री मंड्राक्तिक पनीचे ने कहा कि भारत विक्रम एक हा है और चैन दिवस के वैदिश्यक करा पन आयोजन ने इसे सिद्ध कर दिया है। योग शारोरिक मानीशक लाधियों की मुक्ति का साधन है। मैं देह नहीं हैं मुँद्ध प्रमुद्ध आल्पा हूँ। इसे देह मानव ही समस्याओं की जड़ है। नित्य शुद्ध सनातम प्रमुद्ध आत्मा को जान लेना हो बोग है। बो पचीरी ने इस लगा से बाग का सा पंचाव न हुन संदर्भ में एक शेर उद्भूत किया-जिद्दाों भा होती हुई गैरी से कुशानू हुगारी स्वयं से कभी मुखकात नहीं हुई। इसका आशाब बताते हुए पंचीन

वे कहा कि हमारी संकृषित सीय हुई निज स्वरूप को पहणानने नहीं देवी। पोप संकृषित दावरे की आपक दावरे में के जाने की विश्व है। इस अध्यसर पर विशिष्ट अतिथि एनआर भागेल में बळ कि येन एकआर भागक व केट की पन संस्कारण कनात है। मुख्य गर्ग को संस्कार्ग से पर्दिश्त कबने हेतु येत विद्वान की पुम्बस वह जाती है। अनुरासन और संयम का पाट आज पुत्रा वर्ष की महत्ते आवारणकर है साक्षि भटकाव एवं आवस्यकता है साक भटकाल एक विभाजन से बचाय हो सके इसके किए दोग शिक्षा की सहत्यपूर्ण भूमिका हो, भागंच ने बताई। या दिवस कार्यक्रम के अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलमति प्रो. वसकेन्द्र प्रसाद तिकारे ने वर पर योग परिवार के साथ येंगे धीन पर आपूर मंत्रालय भारत सरकार के आकान पर इस गाँव दिलम के आयोजन का पर इस पान रूपमा के उपयोग को महत्त्व भवाया। भी तिचारी में कहा कि हम वैशिषक समान को एक परिवार के रूप में देखते हैं। येग समान मानव नानि के लिए हैं। योग अनुभव आधारित विज्ञान है जिसे

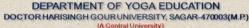
किसी सत्यपन की गरुस से नहें। इसके पश्चात् अंग्रिटेशिय लेख संगोदों में अपने ककाल में पं. वीयरांकर प्रकुष्ट विश्वकीस्ताल्य बर्चपु के फ्रे. इन्हेंच चीपमें ने देश प्रतिप्रध स्थात किसीयत करने में बीप की प्रोहतक की नानों की भी, चीपते ने कहा कि में समत से प्रकार को संगी हैं पहले जो कीर को स्वापिक समता कालाओं के की स्थाप्तिक समया करूकी हैं. दूसर्थ प्रकार विकस्तित समया बडन्करी है जो सेग व्यवस् अस्तर तथा व्यवदार से व्यवस्था को जाती है। योग में यह शक्ति है जो शरीर में है। पोल में यह खांका है जो शांध में हैंग प्रक्रिय समता का पूर्ग विकास करने में सहायक होती है। स्वितियाम पणड़क को मुझे माशा प्रजालेंग में कोलिंद कार में अपने प्रचालेंगे में कोलिंद कार में अपने प्रचालेंगे में कोलिंद कार में अपने प्रचालेंगे मा पार्च करते हुए कहा हिंद भए अवसाद पुरत्यागी व्यक्तात्रक स्वास्थ्य के कारण पार्चीसक स्वास्थ्य के कारण प्रतिकृत्य प्रभाष पढ़ा है। कुर्जिक्का को आसार्य ही, म्युकार रुखों में बंग में अक्टर के महत्व और

युक्तप्रदार के माध्यम से लगेर में पीयक तत्यों में घृद्धि कर देगप्रतियेशक समझ के विकास में क्षेत्रिक्ड आहार की भूमिकर स्पष्ट की। ऑफ्ट्रिय के एउपेन साधक शिन जिन ने बताया कि इस देश में दो लाहा से जादा लोग पेट सीहा सुके हैं और ल्यातर अध्यासता है। लेगों में स्वास्थ्य खण में येग की भूमिका का प्यंजा ज्ञान है इस्तिखें षही लगाता नए येग साभक इस विद्या को सीखने आ रहे हैं।

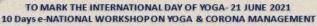
अंतरं प्ट्रीय वेब संगोध्ये के समानन में विश्वविद्यालय के कुरुवन्त्रिय में विश्वविद्यालय के कुलक्रकिय बर्नाल दकेश मीहन जोशी ने कहा कि येग एक अनुरासन की परंपद है। योग समामाण स्वास्थ्य के निमांत में सबसे उन्दुक्त विषय है निसम्बे हमें गहनां से समझना होगा. तभी एका स्वस्थ समाज स्वस्थ वर्ष्ट्र पूर्व स्थान्य निरुप की संकरणना सामग्रेस होगी। कार्यक्रम का स्थापन भाष्य एंच प्रतिबंदन प्रस्तुत करते हुए अर्थानक से. पर्पारा शंकर निर्मा ने कहा कि भारत सरकार से प्रण्या निर्देशों के आधार

के प्रि पर आनम्बर्धन फार्यक्रमी की बृंखल आमेडिक की गई निममें लगभग 2000 (चे हनतः) प्रतिभाविते वे पंतीयन कर्युयाः देश विदेश से स्मिन्त साथे लेली ने कर्युंडम की सफारका के संदेश हमें भेजे। विससे हचरे प्रधाने की सामानित विस्ता हुन्य प्रसामी की साम्हर्भाग सिंद हुं। कैनिड क्ला में येन मन्त्रेयांकरसा तथा है। प्रतिदेश समा देसे सामहिक व्लिक्ट पर धारत के अधिकार व्लिक्टिया गमाज्य, आहिट्स एवं नार्यि के विषय विशेषकों में सभी का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम का संचालम डॉ. निर्तित महत्याल तथा महोत्द्र शर्मा ने किया। इस संपूर्ण आयेजन का तकनीक संबेध शोधाओं दिनेश रोपर ने कि आधार औं, अरूण साथ ने माना। इस अगसर पर विश्वविद्यालय के शिधकगण सहित ही. अनव दुवे, डॉ. बजेर टाकुर, प्रज्ञ साव, कोमल सैनी, जॉत शर्मा, प्रवेश जाटब शिकिम से डॉ. मनेट्स दशर, पंजाब से हाँ. पम्में सिंह, टॉ. आया जिजने आदि उपरिथत थे।

日本の日



INVITATION



12-21 June 2021

SCHEDULE

YOGA PROTOCOL: 05.30 AM to 07.00 AM GUEST LECTURE: 07.00 AM to 08.30 AM



CELEBRATION OF INTERNATIONAL DAY OF YOGA 21 JUNE 2021 FROM 07.00 AM TO 09.00 AM











to will submit the feedback of all the sessions daily on the given link



2. Prof. A.D. Sharma - DOSA 3. Prof. A.P. Tripathi

Dr. Arun Kumar Sao
 Dr. Brajesh Singh Thakur

Working Committee

1. Dr. Nitin Korpal

2. Miss Pragya Sao

3. Mr. Mahendra Kumar Sharma 4. Miss Komal



63

63

6

0

0

670

धरनी का भंगार करें योग विवस आज

mm: विश्व मीग दिवस की पूर्व संध्यः पर शहर के बोग साधकी त्राच्या पर शहर के बात सामका ने बीट प्रतित्वा के त्रम शाउम के बाजू जाने मैदान में सुन्धे तुख पर बीत करके निरोधी शरीर के लिए भोग और अविस्तीनन की महल प्राप्त कर उच्छापालन कर महत्त्व कर संदेश दिखा सामन दिविध के पोग विभाग के विद्यापिन्ट ने कहा कि जीगर्ले की कोक्युन कटाई और पेड्-पीओं की कहा न करने के कारण इस महामारी में हमें करेक में ऑक्सीडन सार्टीटन को अलेक में ऑक्सीवान वार्यप्रेट की मनसूर तेल पहुंच गीन प्रशिक्षक श्री. निर्मान कीप्याल के मिटियन में मीगान्याम का प्रश्लेन कर पी मागान्याम का प्रश्लेन कर पी मागान्याम के प्रश्लेन कर है कि मुद्ध बचा के लिए प्रश्लेक नाम्मेक कर्म में कर्म पूर्व परिवास नाम्मेक कर्म में कर्म पूर्व परिवास किया नाम्मे स्थानमान भी करें। श्रीकि किम नरम स्थी परिवासिया कीर्यमा प्रश्लेक की परिवासिया के इस भीर में कार्य क्रिकेट स्थानमां के इस भीर में कार्य क्रिकेट है, जब परिवासिया कर्मा मंत्रर फिर न असर।